अभिज्ञानशाकुन्तलम् विषयक वक्तव्य01 :

महाकवि कालिदास का परिचय

(ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के संस्कृत ऑनर्स द्वितीय वर्षीय छात्र छात्राओं के-चतुर्थ पत्र की प्रथम अन्विति के लिए। महाकवि कालिदास के बारे में विभिन्न पुस्तकों से विद्यार्थियों के अध्ययनार्थ पाठ्य सामग्री संकलन)

पाठ्य संकलनकर्त्ता : डॉ. विकास सिंह, संस्कृत विभागाध्यक्ष, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार)

महाकवि कालिदास के विषय में भी किसी भी प्रकार की प्रामाणिक सामाग्री का अभाव है। कालिदास ने अपने ग्रन्थों में बाण आदि कवियों की भाँति अपने जीवन के विषय में कोई भी सामाग्री नहीं दी है। अत: अन्त: साक्ष्य का अभाव है। परवर्ती ग्रन्थों में भी कालिदास के किसी ग्रन्थ आदि का उल्लेख नहीं है। अत: बाह्यसाक्ष्य का भी अभाव है। केवल कुछ किंवदन्तियों के आधार पर उनके जीवन पर कुछ प्रकाश पड़ता है। एक किंवदन्ती इस तरह है कि कालिदास बाल्यावस्था में अत्यन्त मूर्ख थे। अपने समय की सर्वोत्तम विदुषी और ज्ञानगर्विता विद्योत्तमा नाम की एक राजकुमारी के साथ विवाह करने के लिए षडयंत्र रचा गया। पण्डितों ने मूक शास्त्रार्थ का आयोजन करके कालिदास को विजयी घोषित किया। विवाह के पश्चात् पत्नी विद्योत्तमा के द्वारा तिरस्कृत कालिदास ने काली देवी की उपासना कर विद्या का वरदान प्राप्त किया।

कालिदास ने घर लौटकर पत्नी से 'अनावृत्तकपाटं द्वारं देहि' (अर्थात् दरवाजा खोलो) कहा। उत्तर में विद्योत्तमा ने 'अस्ति कश्चित् वाग्विशेषः' (वाणी में अब कुछ विशेषता आ गयी है) कहा । कालिदास पत्नी के इस वाक्य से इतने प्रभावित हुए कि इस वाक्य के प्रथम तीन शब्दों से एक- एक ग्रन्थों की रचना कर दी। अस्ति से कुमारसंभवम् (अस्त्युत्तरां दिशि...) कश्चित् शब्द से मेघदूत (कश्चित् कान्ताविरहगुरुणा....) वाग् से रघुवंश (वागर्थाविव संपृक्तौ...)।

ज्योतिर्विदाभरण के एक श्लोक से ज्ञात होता है कि विक्रमादित्य की सभा में 9 रत्न थे। जिनमें से एक कालिदास भी थे-

धनवन्तरि-क्षपणका-मरसिंह-शङ्कु-वेतालभट्ट-घटकर्पर-कालिदासः।

ख्यातो वाराहमिहिरो नृपते: सभायां रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य॥

यह विक्रमादित्य कौन हैं इस विषय में प्रर्याप्त मतभेद है। एक अन्य किंवदन्ती के आधार पर ज्ञात होता है कि कालिदास का अन्तिम समय लंका के महाराज कुमारदास (500 ई.) के यहाँ बीता। यहाँ पर धन के लोभ में एक वेश्या ने उनकी हत्या करवा दी।

कालिदास के जन्मस्थान के विषय में भी काफी मतभेद प्राप्त होता है। काश्मीर के विद्वान् उन्हे काश्मीरी सिद्ध करते है। बंगाल के विद्वान बंगाली और उज्जैन के विद्वान् उज्जैनी-निवासी सिद्ध करते हैं। मेघदूत में कालिदास उज्जैन के प्रति विशेष आग्रह रखते है इससे ज्ञात होता है कि वे उज्जैन के निवासी थे या उज्जैन में वे काफी समय तक रहे। मेघदूत में उज्जैनी नगरी के सौन्दर्य, शिप्रा नदी और महाकाल के मन्दिर का विशेष भावुकता के साथ वर्णन मिलता है। कालिदास के ग्रन्थों को देखने से लगता है कि वे जन्मना ब्राह्मण थे और शिवभक्त थे। अन्य देवों के प्रति भी उनका आदरभाव था। डॉ.

कपिलदेव द्विवेदी ने विभिन्न विद्वानों मे मतों की समीक्षा कर उन्हें प्रथम शताब्दी ई.पू. सिद्ध किया है।

महाकवि कालिदास की सात रचनाएँ प्राप्त होती हैं-

दो महाकाव्य (1) रघुवंशम् और

(2) कुमारसंभवम्

तीन नाटक (1) अभिज्ञानशाकुन्तलम्,

(2) मालविकाग्निमित्रम् और

(3) विक्रमोर्वशीयम्

दो खण्डकाव्य (1) मेघदूत और

(2) ऋतुसंहार